Postal Registration No. G/CHD/0107/2012-14 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 14 अंक 06 30 जून, 2014 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

भ्रूण हत्या का अभिशाप - मानवता का परिहास

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

आज के सभ्य समाज में चारों ओर कन्या भ्रूण हत्या, कन्या हत्या तथा दहेज के लिए मानवता की जननी का सरेआम कत्लेआम कर रहा है और प्रशासन व समाज कुंभकरणी नींद सो रहा है। मानव तो मानवता की जननी को ही लील रहा है। यह कुप्रथा केवल भारत तक ही सीमित नहीं है बल्कि जार्जिया, कुछ दक्षिण-उत्तरी युरोपीय देश, चीन, पाकिस्तान, वीयतनाम, अजरवाजिन तथा अरमीनया में भी व्याप्त है। भारतवर्ष में पंजाब, हरियाणा, जम्मु एवं काश्मीर तथा राजस्थान आदि रा%यों में सबसे अधिक है। उत्तर प्रदेश महिला के विरूद्ध अपराध में सबसे अग्रणीय है। वर्ष 1961 में 100 कन्याओं के पीछे 1024 लड़के, 1981 में 104.1 लड़कों की जन्म दर थी। वर्ष 2001 में यह 1078, 2011 में 1088 जन्म दर हो गई।

अखिल भारतीय स्वास्थ्य अनुसंधान कांउसिल तथा हारवर्ड स्कूल आफ जन स्वास्थ्य की वर्ष 2011 की रिपोर्ट के अनुसार 5 वर्ष से नीचे की लड़कियां लड़कों से 21 प्रतिशत अधिक मौत की आगोश में चली जाती हैं जबकि युनीसेफ की 2007 की रिपोर्ट इससे भी गंभीर बात उजागर कर रही है कि 5 वर्ष से नीचे के लड़कों से 40 प्रतिशत अधिक कन्याएं मरती हैं क्योंकि उन्हे भूख से मरने को बाध्य किया जाता है। बीमार होने पर उसे हस्पताल नहीं ले जाया जाता और ना ही दवाई दी जाती है। भारतीय रजिस्ट्रार जनरल की 2010 की एक स्टडी रिपोर्ट के अनुसार भारत में यह कुप्रथा काफी समय से है। कन्या को दूध की बाल्टी में डूबोकर मारा जाता था, नमक खिलाया जाता था, मिट्टी के बर्तन में बंद कर जिंदा जला दिया जाता था। यह कुकृत्य भारत के विभिन्न राज्यो में अलग-अलग तरीके व्याप्त रहे हैं। कन्याओं को निमोनिया तथा डायरिया जैसी बीमारियां भी 5 वर्ष के तक इसी उम्र के लड़कों की तुलना में चार-पांच गुणा अधिक हो रही हैं। हमारा सभ्य समाज भ्रूण हत्या के क्या-क्या करूर तरीके अपना रहा है। यह कानून से बचने के उपाय तो ढूंढ सकता है लेकिन तथ्य भूल जाता है कि स्त्री के विरूद्ध अपराध करने वालों के कुल नाश भी हुए हैं। इतना सब होने के बावजूद हम इस भ्रूण हत्या जैसे अभिशाप से मुक्ति हासिल पाने के लिए बाध्य क्यों नहीं हो रहे हैं।

हमारा समाज कन्या को देवी मानने का भी ढोंग रचता है। सुबह कन्या पूजन के बाद अपनी ही बहू का गर्भपात करवाने जाना आम बात है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार भारत में हर वर्ष अनुमानित 75000 कन्याएं भ्रूण हत्याएं हो रही हैं। समस्त मानव समाज को कलंकित करने वाली भ्रूण हत्या का वास्तविक अर्थ मां के गर्भ में पल रही नन्ही जान को खत्म करना है। समस्त विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय महिला बाल दिवस पुरजोर से मनाता है लेकिन इस महान राष्ट्र का दुर्भाग्य है कि भारत सरकार के अपने अनुमान के मुताबिक पिछले एक दशक में 10 मिलीयन यानि एक करोड़ कन्याएं या तो जन्म से पहले या पैदा हाते ही मार दी गई और यह भी उस समय हो रहा है जबकि देश का वर्तमान 'जन्म पूर्व जांच तकनीक (दुरूपयोग की रोकथाम व नियमितता) अधिनियम 1994(एन डी पी टी एक्ट 1994)' गर्भ में पल रहे बच्चे की जन्म से पूर्व लिंग जांच करने की इजाजत नहीं देता है और इस संबंध में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी

-शेष पेज 2 पर

Bhai Surender Singh MALIK Memorial All India Essay Writing Competition ON 04-7-2014

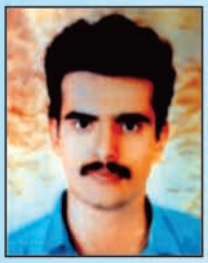

Jat Sabha, Chandigarh has been organising **'Bhai Surender Singh Malik Memorial All India on the Spot Essay Writing Competition'** for the College, University & 10th, 10+1 and 10+2 students every year. This competition is dedicated to the students in the sweet and everlasting memory of late Sh. Surinder Singh Malik, Electronic Engineer, who met with a Fatal car accident in the prime of his life (23 years) on June 5, 1993 and succumbed to the injuries on July 19, 1993. Rani of Jhansi died at the age of 23. Alexender the great died at the age of 23, Florence Nightingale died at the age of 23 and Shefali Chaudhary too died at the age of 23. We are thus reminded of the sad saying "Those whom God loves, die young. During his short of life, he had held high principles and moral values and the award is to envisage his high principles of life. The award will only go to the deserving and meritorious students whose essays are evaluated best by the judges. To keep his memory alive and to develop faith and trust in the younger generation, this competition is being held every year. Inspite of all the odds an effort has been made to show his silver lining in the black clouds to the students so that they develop a belief in themselves by winning the award. The competition is financed by Bhai Surender Singh Malik Institute of Medical Science and Educational Research, Nidani, District Jind Haryana. This prestigious competition carries the prizes for urban and Rural categories. This competition will be held on 04-7-2014.

विस्तृत पृष्ठ 7 पर

’k"k i̇̀t &1

समय-समय पर कानून की पालना के लिए असंज्य हिदायतें जारी की हैं लेकिन फिर भी विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अनुमान के मुताबिक देश में तकरीबन 2000 कन्याएं प्रतिदिन पैदा होने से पूर्व गर्भ में ही नष्ट कर दी जाती हैं जो कि सज्य समाज पर एक शर्मनाक कलंक है।

देश की स्वतंत्रता के 67 वर्षों के पश्चात एक तरफ तो केंद्रीय सरकार विकास की दर का ढिंढोरा पीट रहीं है वही दूसरी ओर इस देश में लड़के की चाहत, दहेज की लालसा व वंश बढ़ाने आदि के नाम से महिला-पुरूष के लिंग अनुपात में निरंतर भारी गिरावट आ रही है जो कि जन प्रतिनिधियों तथा सरकार की जनहित के प्रति उदासीनता व गैर जिममेवारी को स्पष्ट दर्शाता है। परिवार की अचल संपज़ि में लड़की की बराबर की हिस्सेदारी भी ग्रामीण समाज में भ्रूण हत्या का एक मुज्य कारण है। परिवार की अचल संपज़ि व जमीन जायदाद में संयुक्त हिस्सेदारी के कारण माता-पिता के पश्चात लड़की बराबर की हिस्सेदार हो जाती है जिस कारण कई बार बेवजह जमीनी विवाद उत्पन्न होते हैं जो कि भ्रूण हत्या जैसी बुराई का कारण माना जा रहा है और इसके लिए समाज के नैतिक मुल्यों को उभारना जरूरी है। आज स्थिति यह है कि हरियाणा में औसतन 1000 लड़कों में केवल 879, जज्मू कश्मीर में 889 और पंजाब में 785 लड़कियां हैं और कई जिलों में तो 800 से कम औसतन लड़कियां हैं जबकि राष्ट्रीय स्तर पर 1000 लड़कों के पीछे लड़कियों की संज्या 914 है। सन 2001 की जनगणना के अनुसार 1000 लड़कों की तुलना में पंजाब में 798, हरियाणा में 819, चंडी÷ढ़ में 945, दि÷ी में 868, गुजरात में 833, हिमाचल प्रदेश में 896 व राजस्थान में केवल 909 लड़कियां ही बची हैं।

इसी प्रकार से कई राज्यों जैसा कि पंजाब का कन्या भ्रूण हत्या से संबंधित मुकद्दमों व अपराधों में पहला स्थान है जबकि राजस्थान, मध्य प्रदेश, छज़ीसगढ़ व हरियाणा इन अपराधों में क्रमशः दूसरे, तीसरे, चौथे व पांचवें स्थान पर हैं। एक मैडीकल विशेषज्ञ के अनुसार आज देश में 80 हजार महिलाएं वैध गर्भपात का शिकार हो रही हैं।

भ्रूण हत्या की बुराई सज्य नागरिक समाज में एक गंभीर सामाजिक अपराध के तौर पर निरंतर पनप रही है जो कि राष्ट्र के विकास के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। इस भंयकर अपराध को रोकने के लिए हमारे पास भारतीय दंड संहिता की धारा 312 से 316 के तहत अत्याधिक प्रज़ावी प्रावधान उपलज़्ध हैं। ‘जन्म पूर्व जांच तकनीक (दुरूपयोग की रोकथाम व नियमितता) अधिनियम 1994(एन डी पी टी एज़्ट 1994)’ के तहत भी इस जघन्य अपराध को रोकने के लिए कई प्रभावी प्रावधान किए गए हैं लेकिन यह अधिनियम भी इस अपराध को रोकने में सक्रिय व प्रभावशाली साबित नहीं हो रहा है। एक सर्वे के मुताबिक केवल 40 प्रतिशत पुरूषों तथा 30 प्रतिशत महिलाओं को इस अधिनियम का ज्ञान है जबकि 90 प्रतिशत लोगों का विचार है कि लड़के का होना परिवार के वंश को बढ़ाने के लिए आवश्यक है। इस संबंध में स्वास्थ्य मंत्रालय की सलाहकार समिति की एक महिला सदस्य ने दावा किया है कि अभी तक इस घोर अपराध की रोकथाम के लिए अपराधोंयों के विरूद्ध केवल 406 अपराधिक मामले दर्ज किए गए हैं और केवल दो डाज़्टरों को सजा दी गई हैं। वर्तमान आधुनिक तकनीक की वजह से दक्षिणी पूर्वी एशीयन देशों - भारत व चीन में महिलाओं के मौलिक अधिकारों का लगातार उलंघन हो रहा है। हाल ही में अमेरिका द्वारा भ्रूण की जांच के लिए नई आधुनिक तकनीक - ‘‘बेबी जैंडर मैटर होम डी एन ए जैंडर टैस्टिंग किट’’ विकसित की गई है जिसकी कीमत केवल 275 डालर है। इस तकनीक का भारत में ‘‘जंत्रमंत्र’’ के नाम से खूब प्रचलन हो रहा है। इस तकनीक के द्वारा 48 घंटे के अंदर गुप्त तरीके से ई-मेल द्वारा लिंग संबंधी जांच की जानकारी उपलज़्ध करवा दी जाती है।

लिंगानुपात में पहले से ही पिछड़ रहे हरियाणा ने एक नया कीर्तिमान स्थापित कर लिया है अब जे बी आकार में चीन निर्मित लिंग निर्धारण मशीन हरियाणा के बहादुरगढ़ में ही जोड़ी जा रही है। करीब एक लाख रूपये की यह मशीन बहुत ही कारगर और आसानी से कहीं भी लाई व ले जाई जा सकती है। हाल ही में यह मशीन भिवानी में एक झोला छाप डाज़्टर से बरामद हुई और उससे पुछताछ पर इसकी जड़े दिल्ली भागीरथ प्लेस तथा बहादुरगढ़ में गठन की जानकारी मिली है और ऐसी मशीन कैथल के किठाना गांव में भी मिली है। ज्ञात हुआ है कि हरियाणा सरकार ने केंद्र सरकार को इस मशीन पर प्रतिबंध लगाने हेतू लिखा है लेकिन केवल ऐसे प्रतिबंध से शायद ही कोई परिणाम आ सके। जरूरत है जन जागरन्ण की और लोगों की मानसिकता में बदलाव लाने की अन्यथा इसके परिणाम मानवता के लिए भयावह हो सकते हैं।

भारतीय दंड संहिता की धारा 312 के तहत यदि वैध गर्भपात के समय महिला के जीवन को कोई खतरा उत्पन्न हो जाता है तो इसके लिए 3 साल तक की सजा, जुर्माना या दोनों का प्रावधान किया गया है। धारा 313 के तहत यदि महिला की अनुमति के बिना गर्भ गिराया जाता है, भले ही वह बच्चो को ना चाहती हो तो भी आरोपी को आजीवन कारावास अथवा दस वर्ष की सजा दी जा सकती है। इसी एज़्ट की धारा 314 के अनुसार यदि महिला के बच्चो के गर्भपात के समय किसी कारणवश महिला की ज़ृत्यु हो जाती है तो 10 साल तक की सजा व जुर्माने का प्रावधान है। धारा 315 के अनुसार अगर बच्चे को जीवित जन्म लेने से रोका जाए या उसे जन्म के बाद मार दिया जाए और अगर माता की जान की परवाह किए बिना यह अपराध होता है तो आरोपी को 10 वर्ष तक की सजा व जुर्माने का प्रावधान है। एज़्ट के धारा 316 के तहत अगर दोषपूर्ण तरीके द्वारा की गई किसी कार्यवाही से अजन्मे बच्चे की मृत्यु हो जाती है तो 10 साल तक की सजा व जुर्माने की राशी का प्रावधान किया गया है।

इसके अतिरिक्त संविधान की धारा 21 के अनुसार व्यक्ति के स्वास्थ्य संबंधी अधिकारों धारा 12 के तहत मानव अधिकारों की रक्षा तथा धारा 17 के तहत सिविल तथा राजनैतिक अधिकारों की सुरक्षा का प्रावधान है। इसी प्रकार वर्ष 1992 में बाल महिला की सुरक्षा, बर्चस्व व विकास के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना भी तैयार की गई जिसके तहत

लड़कियों को भ्रूण, अशिक्षा, अज्ञानता व शोषण आदि समस्याओं से पूर्णतया निजात दिलाकर लिंग भेदभाव के बिना बराबर व उचित अधिकार देने की व्यवस्था की गई। इसके साथ ही भारत सरकार द्वारा लड़कियों की अवस्था को सुधारने के लिए वर्ष 1997 में बालिका समृद्धि योजना शुरू की गई जिसका उद्देश्य लड़कियों के प्रति परिवार व समाज के नजरिए में मूल भूत परिवर्तन लाना है। इसी योजना के अनुसार राष्ट्र में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों में प्रतिवर्ष जन्म लेने वाली लगभग 25 लाख बालिकाओं की अवस्था को सुधारने के कार्यक्रम चलाए जाएगें। इस योजना के तहत प्रसूज़ि से पूर्व 500 रूपये की सहायता राशी देने का कार्यक्रम पहले से ही शुरू किया गया है। लेकिन बिहार, उज़रप्रदेश, राजस्थान आदि कई राज्यों में जच्चा-बच्चा की सुरक्षा व सहायता के लिए आंबटित लगभग 56 प्रतिशत राशी विभिन्न अनियमितताओं के कारण खुदबुर्द कर दी गई जिसका लाभ गरीब वर्ग को नहीं मिल सका। इसके साथ-साथ कन्या भ्रूण हत्या के जघन्य अपराध को रोकने के लिए दहेज प्रतिबंध अधिनियम 1961, हिंदू मैरिज विवाह अधिनियम 1955, हिंदू संस्कार व संरक्षण अधिनियम 1956, समान पारितोषित अधिनियम 1976 आदि के द्वारा भी महिलाओं की आत्म सुरक्षा व अधिकारों की सुरक्षा के प्रावधान किए गए है।

यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि उपरोक्त सभी प्रावधानों व कार्यक्रमों के बावजूद भी आज के सज़्य समाज में महिला-पुरूष लिंग अनुपात घट़ता जा रहा है जिस पर नियंत्रण करना समय की जरूरत है। कुछेक स्थानों पर कन्या को देवी के रूप में पूजा जाता है। कन्या पूजन नवरात्रों में आम है। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, अहिल्या, सावित्री इसके अनेकों प्रमाण हमारे इतिहास में उपलज़्ध हैं। इसके बावजूद कुछ लोग स्त्री को पांव की जूती मानते हैं या 'ताड़न के अधिकारी' कहते हैं। ऐसी प्रवृति के कारण भ्रूण हत्या करने वाले अभी तक जागे नहीं हैं और बार-बार एक ही गुनाह कर रहे हैं।

पुरूष प्रधान समाज में लड़के को अभिमान और लड़की की भ्रूण में हत्या हो रही है। वह यह भूल जाता है कि अगर यही सोच उसके नाना-नानी व दादा-दादी की रही होती तो उसकी जननी इस संसार में नहीं आई होती तो फ़िर उसका वंश कैसे चलता। लेकिन यह विडंबना है कि मानवता की जननी की भ्रूण में हत्या हो रही है। इसके लिए हमें जागरूक होना नितांत आवश्यक है। अन्यथा प्रकृति हमें कभी माफ नहीं करेगी और यह पाप बढ़ता रहेगा। जब भी इंसान दुख में होता है वह सदा 'मां' को ही पुकारता है। आज स्त्री पुरूष के साथ हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रहीं है। विकास का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां स्त्री का योगदान ना हो। मदर टैरेसा, कल्पना चावला, सुनीता विलियम, कर्णम मगेश्वरी जैसे अनेकों उदाहरण हैं जिन्होने स्त्री जाति का ही नहीं अपितू समस्त मानवता का सिर उंचा किया है। आज स्त्री डाज़्टर, इंजीनियर, सेवा अधिकारी, पुलिस तथा प्रशासनिक सेवाओं में कार्यरत है। भारत की प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति भी एक स्त्री रही है फ़िर भी हम स्त्री को हीन भावना से ज़्यों देख रहे हैं? ऐसा करके हम विकास के रास्ते में स्वंय बाधा बन रहे हैं।

यहां तक कि माननीय सर्वोच्च न्यालय ने भी माना है कि यह दुर्भाग्य की बात है कि इस तथ्य के बावजूद कि कन्या की मात्र मृदु आवाज व स्पर्श से माता पिता को सकून मिलता है इसके बावजूद भी कारण चाहे कोई भी हो कन्या भ्रूण हत्या का दुष्कर्म समाज में आज भी प्रचलित है। इसलिए आज कन्या भ्रूण हत्या की बुराई को जड़ से खत्म करने की आवश्यकता है जिसके तहत पी एन डी टी एज़्ट 1994 तथा अन्य कानूनों द्वारा प्रदज़ प्रावधानों को प्रभावशील व सुचारू रूप से लागू करने की आावश्यकता है। इसके साथ-साथ सामाजिक दृष्टिकोण विशेषकर महिलाओं की सोच को बदलने की जरूरत है ताकि पुत्र की चाहत, वंश बढ़ाने की चिंता, अतिंम क्रियाकर्म पुत्र द्वारा किए जाने की संकीर्ण, रूढ़ीवादी विचारधाराओं से समाज का उभारा जा सके। एक मध्यम वर्गीय व्यक्ति के लिए लड़की की शादी को लेकर समस्या बन रही कमर तोड़ मंहगाई व लगातार बढ़ रही दहेज की मांग पर भी कानून द्वारा अंकुश लगाए जाने की जरूरत है। महिला सशक्तिकरण कन्या भ्रूण हत्या के अपराध को रोकने में काफी कारगर साबित हो सकता है इसलिए पुलिस बलों, सुरक्षा बलों, सभी सरकारी सेवाओं, विधानसभाओं तथा देश की संसद में महिलाओं की 50 प्रतिशत भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए ताकि महिला वर्ग आत्म निर्भर होकर खुद्दारी व सज़्मान से निर्णय ले सके। इसके साथ ही मेरा सभी समाज सेवी व धार्मिक संस्थाओं से भी अनुरोध है कि समाज के लिए कलंक बन चुकी कन्या भ्रूण हत्या की इस बीमारी को जड़ से मिटाने के लिए जन साधारण में महिला शिक्षा व उत्थान के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए जन अभियान के तहत निरंतर कार्यक्रम आयोजित करे।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0 (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

हमें जिन पर गर्व है।

जाट सभा चंडीगढ़ के आजीवन सदस्य श्री सतीश कुमार की सुपुत्री प्रिंयका मकान न. 1348 A, सैक्टर–39 B चंडीगढ़ ने सी.बी. एस.सी. नई दिल्ली द्वारा आयोजित बारहवीं कक्षा की शारदा सर्वहिकारी मॉडल सीनियर सैकंडरी स्कूल, सैक्टर–40डी, चंडीगढ़ से 82.8 प्रतिषत अंक प्राप्त करके समाज का नाम रोशन किया।

इनकी शानदार सफलता पर जाट सभा चंडीगढ़ उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

आदमी उतना काम करे जितना हो सके। यह नहीं कि रूपये के लिए जान ही देदे। – अज्ञात

Challenges before the new Prime Minister

- Ram Niwas Malik

The recent general elections in April-May 2014 for the 16th Lok Sabha created lot of euphoria amongst the voters somewhat reminiscent of the elections in March 1977. Mrs Indira Gandhithen remained in political wilderness for 3 years but she came back strongly with 2/3rdmajority in Jan 1980 elections held after the fall of 3 month old Charan Singh Government at the Centre. This time the euphoria was missing because the people voted for her party more out of compulsion than by excitement or choice as they were fed up with the daily quarrels of Janta Party agglomerates under Morarji Desai. Congress party again won the elections in 1984 with an unprecedented majority (416 out of 543). BJP got only two seats. It was called Parivar Niyojan of BJP. This time there was no euphoria but a strong sympathy wave was blowing on account of assassination of Mrs Indira Gandhi. The good-will reservoir of the new Government started evaporating very soon as the government started losing its way for want of drawing a precise road map for economic development. Only the Ministry of Information Technology made the much needed headway. Inexperience of Rajiv Gandhi and the naivette of his cohorts (Computer boys) were the main causes of poor governance and growing disaffection. High octane euphoria was visible again in 1987 Assembly elections in Haryana. The party under Ch.DeviLal got 85 of the 90 seats in Haryana. Congress party got only four. But this euphoria too was short lived because of poor governance and the Congress Party came back to power with a majority in 1991.There was no euphoria in 2004 elections when UPA came back to power.Ofcourse, there was a new air of excitement, hope and optimism when Dr Manmohan Singh was made the Prime Minister.The triumvirate of Dr Singh , Chidambram and M. S. Ahluwalia was likened to the constellation of Lord Brahma , Vishnu and Mahesh. Dr Manmohan Singh made the same mistake as other Prime Ministers had done in the past. He proceded without drawing a proper road map for economic development of the country. The growth rate of GDP soared to 9% in 2008-09 but the gains ofthis growth did not filter down to the lower starta of society. This pick-upin growth was largely due to the external demand of Indian goods and the international revolution in the field of IT. The government non-deservingly started claiming credit for it. When elections were due in 2009 , the popularity curve of UPA-1 Government was down considerably. But the BJP committed a silly mistake. It opposed the Nuclear Treaty with US after championing it earlier during the NDA rule. This single factor tilted the scales in favour of UPA 1 and it won the elections handsomely. However, voters at that time were clamouring slowly for Narendra Modi to be declared as the PM candidate.But this time the wish of the people was fulfilled by BJP President Rajnath Singh and the whole nationwas agog with NarendraModi as the PM candidate. Accordingly NDA came back to power with a vengeance winning 335 seats and Congress party getting only 44. Now it is a hard fact that people largely voted for Narender Modi and not for BJP with the soul intention of giving a clear majority to get rid of the dirty coaltionbusiness.

Traditionally Indian voters have been the follower of a doer or a crusader. Narendra Modi has built that image of a dare-devil Chief Minister since 2001.People of India were desperately waiting for a prime minister who is less theoretical / rhetoric and more practical with a can-do image in the field of economic development. Unfortunately we never had one of this kind. Jawahar Lal Nehru was a paragone of many virtues. Credit goes to him for many achievements (irrigation, power generation, education, planning, instituonal development, steel manufacturing) but the economic growth hardly exceeded 3% of GDP. He ruled India for twelve years (1952-64)buthe never practised the vote bank politics. His two drawbacks were that he involved himself more in international affairs than the problems at the domestic front and giving a free hand to Krishna Menon. Chester Bowles, the then US Ambessador in India told a journalist, "Your Prime Minister doesn't understand economics". B. K. Nehru admits this fact in his auto biography to tell that Jawahar Lal Nehru had a poor knowledge of finance ministry. However hisgreatest contribution was to develop and bestow highest respect for the democratic institutions.

Rural areas saw the light of freedom only when Mrs Ghandhi came to power and money started rolling for rural projects.Roads,electrification, green revolution were the attributes of this period (1968 to 1976) but industrialisation and infrastructure development in core areas remained as sluggish as ever. Rajiv Gandhi catapulted India to a higher echelon only in the field of Information Technology. The government of VP Singh and Chander Shekhar were a total disaster. Narsimha Rao managed this disaster by taking the revolutionary step of opening the Indian economy in 1991. But the real growth engine .i.e infrastructure development remained fluttering as ever. Vajpayee government could take credit only for Pradhan Mantri Gramin Sadak Yojana. UPA government in 2004 introduced Mahatama Gandhi National Rural Employment Guarantee Scheme (MNREGA) which only fills the pockets of village Sarpanches and the hierarchy above. CAG report is very critical about it. Dr. Manmohan Singh declared the Bharat Nirman Programme on 15th August 2005 from the ramparts of Red Fort. Unfortunately monitoring

of this wonderful programme was never followed and it has now been thrown into the dustbin of History. The most remarkable progress was in the field of power generation. There was a capacity addition of 55000 MW (2007-2012) during the 11thfive year plan. But this achievement turned into a discredit when Coal India Limited(CIL) failed to dig out enough coal to feed the new power plants.UPA 2 was a pale shadow of UPA 1 and it has nothing on its credit side. In fact it became notorious for scams, ill advised Food Security Bill and new Land Acquisition bill and the Prime Minister constantly remaining in the silent mode.People became sickeningly fed up with the poor governance, policy paralysis and arm twisting by coalition partners .An atmosphere of hope, optimism and aspiration returned only when Narendra Modi was declared as the PMcandidate by BJP in September 2013 and the rest is history

The election victory was marred by some unethical practices in the distribution of tickets in many constituencies were given to some strange candidates of proven ineptitude. In Haryana state, BJP distributed ticketsto four Congressites. One BJP candidate required helpers to make him stand up to the mike. In fact Col Sona Ram got BJP ticket from Barmer even being an ex-Congress leader. In Gujarat alone, 11 ex-Congress members got BJP tickets.This trend was termed as congressisation of BJP. The party was also criticised for dropping parachute candidates in many constituencies e.g. Kiran Kher at Chandigarh, Arun Jaitley at Amritsar and Gen V. K. Singh at Gaziabad. Sukhbir Jaunpuria and his Samdhi (K. S. Tomar) could manage tickets from Swai Madhopar and Amroha. Their entry into BJP was hardly one month old. Indian express braught the news that 186 new MPs out of 543 have criminal record and 112 with serious charges.The PM made the first slip when he inducted two members in his cabinet who were defeated in the Lok Sabha elections.

Shekhar Gupta calls the present lot of young voters as aspirational and transactional India. He calls transactional becausepeople are unforgiving this time and will not spare the new government if the results are not delivered in time, particularly on the front of unemployment and price rise of essential commodities. Mr. NarenderModibecame the 15th Prime Minister of India on 26th May 2014. His astuteness and grip on the state administration is well known. But ruling the country with aplomb is altogether a different ball-game than running a State. So let us hope he will come to the expectations of the people and start a new chapter in good governance. If you visit different parts of Gujrat, you will find that this state is not much different from other developed states like Haryana. The level of sanitation is poor, Traffic snarlsare common on urban roads. Infrastructure in industrial estates is poor. The only field where the state excels others is 24-hour supply of electricity and water, and more responsive administration. Now Indian voters have built a mountain of hopes to be fulfilled by the new Government. They expect the new PM to hit sixers like VirendraSehwag in cricket .Infact both are openers of the new innings .The new Prime-Minister knows it very well. His situation is like that of Mahatama Gandhi when Congress declared at Lahore session in December 1929 that, "Complete Independence is the aim of the freedom struggle ". Thereafter all the leaders requested Gandhi Ji to chart out a new course himself for the attainment of complete freedom from the Britishers. Gandhi Ji accepted the offer but did not know what to do till 1942 when he started the historic Quit India movement. Likewise the new Prime-minister is desperately in search of financial wizards and advisors to help him to set the house in orderLet us hope he succeeds in the end like the father of the nation. Ridiculously ArunJaitely equates Baba Ramdev to the Mahatama Gandhi .Present day voter wants results in the following four areas urgently.

1. Promotion of employment opportunities so that an educated youth gets a reasonably good job to live a decent life.
2. Lowering the sale price of essential commodities.
3. Prevention of adulteration in food-stuffs.
4. Improvement of delivery of service from the in-place infrastructure like hospitals, schools etc.

At the National level the government needs to firmly grapple with the following issues.

1 Reduction of fiscal deficit to 3% of GDP.
2 Reduction of Current Account Deficit to 3% of GDP.
3 Rising debt on power utilities (read the statement of power companies of Delhi before the Supreme Court on 19.05.2014)
4 Rising N P As on banks.
5 Rising debt on state Governments and Central Government.
6 Increasing the sanitation level and Human Development Index of the people of India.
7 Promoting the level of ease of doing business in India. Presently she occupies 134th rankin the table of 189 nations.
8 Controlling inflation.
9 Water resources and Hydro-power development in various river basins of India.
10 Expansion of Railway network.
11 Massive increase in Infrastructure Development in core areas.

12 Reforming FCI and prevent the decay of food grains for want of adequate storage capacity.

13 Cut down the consumption of crude oil and reduce the import costing Rs. 10 lac crore annually (8% of GDP) and explore new avenues of oil aggressively in India and abroad.

14 To mine adequate amount of coal to feed all the thermal power plants.

15 Bringing revolution in the development of solar energy.

16 Controlling population explosion to ensure zero growth rate by 2020.

All these issues are very knotty and require patience for their solution. It will be good strategy to pluck low hanging fruits first. Issue of controlling fiscal deficit is the most difficult task. This is because MNREGA and Food Security Bill schemes involve huge expenditure to the tune of Rs 250 lac crore and even 50% of the money doesn't reach the poor. These two schemes need to be converted in to a single social security net for the poor whereby a sum of Rs. 160 lac crore should be directly paid to 8 crore BPL families through banks. This system will totally choke the leakage of funds in the process. Mr. Ruchir Sharma clearly tells in his famous book, " Breakout Nations" that financial system collapsed only in those countries who could not control the three metrics i.e. fiscal deficit, current account deficit and debt to GDP ratio within the prescribed limits. These limits exceeded mostly in those economies where money was spent more on welfare schemes and less on infrastructure projects. The new Prime-Minister wants to convert Indian railways in to a big engine of growth. But it will require massive funds. 95% accruals from freight are used in paying salaries and defraying maintenance expenditure. In order to raise the necessary funds, the Ministry has no option but to raise the fares which the Party will not allow to do so. This is the problem of Indian economy. Same is the fate of power companies running in the red for a very long time in most of the states.Therefore the new Prime-Minister needs to urgently discuss these issues with Chief ministers , Secretaries and advisors of the government and draft a pragmatic road map for the economic development and then address the nation accordingly

In India, it is said that, " It is easier to become the Prime-Minister than to run the Prime-Ministership with aplomb ". This fact has been proved right in case of all the 14 Prime-Ministers of India we have had so far. To be a successful Prime-Minister, the candidate has to be honest, dedicated, wise, bold, farsighted, pragmatic, economist, rooted to the ground realities, visionary, professional, team leader, motivator, methodical and competitive. He must have a burning desire in his heart to take India ahead of China within a decade. Only Sardar Patel possessed all these qualities. Unfortunately he could not become the Prime-Minister of India. He acquiesced to the desire of Gandhiji to make JawaharLal as the Congress President in 1945 because he was not sure if his failing health would help him to carry the day. He was right and died of heart- attack in December 1950 as Deputy Prime-Minister of India. The new Prime-Minister shows some reflections of the great Sardar in his persona. Let us hope he gets a right advisor and steers the ship of India's destiny.

By far India should have been much ahead of other nations. China in 1950-60 period was way behind India. It was Deng who strictly enforced the one child policy and large scale economic reforms in 1974. Now you can see the difference between two countries. To give another example, China took only six years to build the 18200 MW 3-Gorge dam whereas the capacity addition by NHPC is only 7000 MW since 1983.still all is not lost yet. Foreigners still perceive vast untapped potential of economic dynamism in India. A stable Government has arrived after many years and let us hope and pray that it rises to the occasion this time to develop a strong and vibrant India and herald the promised good days very soon

Presently Indian economy is in total mess.The country is also riven with other serious problems. For example, the stores of Quarter Master General of Indian military are almost empty and India cannot fight awar for more than two weeks. Obviously the new Prime-Minister will face many such insurmountable difficulties in setting the house in order. But his success will be ensured only if the entire Nation shows some patience and extends heartiest co-operation to the new Government.

हमें जिन पर गर्व है।

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला के आजिवन सदस्य श्री सुरेन्द्र सिंह की सपुत्री नीशिता राठी मकान न.0 जी–3, एच.एम.टी टाऊनशिप, पिजौंर, ने सी.बी.एस.सी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 10वीं की परीक्षा में 10 सीजीपीए प्राप्त किये ।

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला के आजिवन सदस्य श्री सतपाल मलिक के सपुत्र पुलकित मलिक मकान न.0 एफ–6, एच.एम.टी टाऊनशिप, पिजौंर, ने सी.बी.एस.सी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 10वीं की परीक्षा में 10 सीजीपीए प्राप्त किये ।

इनकी शानदार सफलता पर जाट सभा चंडीगढ़ उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

SIR CHHOTU RAM STOOGE OF THE BRITISH OR A DEFENCE STRATEGIST OF INTERNATIONAL REPUTE?

- COL ONEL Mehar Singh Dahiya, Shaurya chakra

During the course of my journey of the last few years as a social activist I have tried to understand various aspects of the Haryana society, be it the overall social panorama, social /cultural traditions of the people or the value system, self esteem /pride or understanding /practicing of the economic matters predominantly keeping the JATS in my focus .The reason for this is that they being large in number and many other reasons are practically the anchor of the society. The study of the society per se is difficult without deliberating on its leadership i.e. what the quality of leadership has been and to make a reasonable guess as to what it is likely to be in future. In this direction I took up the study of all the political activities of early 20 th century, when India or shall I say British India of those times was a cauldron or a boiling pot of multifarious activities .As if to add to the confusion came the GREAT WARS in Europe primarily but simultaneously effecting Middle East, North Africa or South East Asia. Since my aim in this write is not to deliberate on other leaders and the contribution they made except as a passing reference since I wish to focus on SIR CHHOTU RAM PER SE.

It was around 1920 that Chhotu Ram had a brief association with the POLITICAL MOVE MENT CALLED CONGERESS(it became a political party as we see it today much later).In fact it will not be grossly wrong to say that the UNINIONST PARTY OR THE ZAMIDARA LEAGUE(Ch Chhotu Ram along with Fazal- e- Hussain was the CO-FOUNDER) was the first party t o establish themselves in India with their proper organizational set up /manifesto etc and took power ,functioned in all matters other than defense and foreign affairs, of course under the overall control of the governor general/viceroy. In those days there were two parts of India one under direct governance of the Raj and other divided in to 562 states with RESIDENT present in each to see that they remained in their senses/limits so to say. Late 19th and early 20th century the whole world has been effected by whole lot of turbulent activities of various hue be they of social ,political or military reasons and INDIA was no exception. In this there was an opportunity which many could not see except Sir CHHOTU RAM, a visionary /astute leader who could foresee and encashed it purely for the deprived segment of the society whose cause was always dear to him. Gandhi arrived in India in Jan 1915 and by then lot of water had flown down the Yamuna/ganges. To remain confined to the Province of Punjab Ch Chhotu Ram was already on his LEGEDRY/ INCOMARABLE JOURNEY in the affairs of the province of Punjab specifically and at the level of affairs of India broadly.

The strategy /methodology of different leaders of those days was also diverse, like some believed in purely constitutional methods, some believed in a a mix of constitutional /agitational where as on the other front some believed in purely confrontational. Obviously the ultimate aim of them all across the board has been an INDEPENDENT INDIA. In this there were few who were idealist with lofty ideas some were pragmatist some were too moralistic so to say but each one of them viewed the world through their own prisms. One issue that I wish to remain confirmed after giving this cursory view is DEFENCE POLICY OR THE SHAPE IT IS GOING TO TAKE POST INDEPENDENCE.I wish to say with a great amount of certainty that except Ch Chhotu Ram non other had even an idea, what to talk of a coherent view of the whole thing

MA Jinnah once said "IT IS NOT A WISE THING TO AGITATE A HUNGRY AND EXPLOITED PEOPLE" because unless properly guided or channelized the whole energy may become self destructive and create an implosion. My understanding /interpretation is that this aspect would have remained etched deeply in ch. chhotu ram's psyche, because this aspect figures prominently in all his actions. To begin with He had a deep understanding of the matters at the grass root level, having literally risen from the dust and at the same time deeply identified with his people .NO OTHER LEADER OF THOSE TIME HAD SUCH AN ALL INCLUSIVE APPROACH, EVEN TRANSENDING ACCROSS TH RELIOGIOUS LINES, A TRULY SECULAR IN HIS THOUGHTS AND ACTIONS .I can say there is no other example IN THE WORLD HISTORY TO COMPARE WITH THIS.

When the FIRST WORLD WAR came Ch Chhotu Ram saw in it an opportunity for his hungry and exploited masses and by a well orchestrated campaign, the province of Punjab under his stewardship contributed immensely man, material and even money more to benefit his own people than for an alien cause.It is also worth while to say that the entire leadership was in total agreement to play a positive role in this war effort. To give an idea BRITISH ARMY whose strength was a motley 2 lacks expended to to over 10 lacks during and after the war of whom ,about 60 % came from Punjab alone .NO WONDER PUNJAB WAS CHRISTENED THE SWORD ARM OF BRITISH INDIA. Here lies the biggest question as to what did we achieve?.In my understanding we achieved TWO THINGS FIRSTLY, ALTERNATIVE SOURCE OF EMPLOYMENT FOR OUR YOUTH AND HENCE PROPER CHANNELIZING THEIR ENERGY AND SECOND IS INTERNATIONAL EXPOSURE WHICH POST DEMOBILISATION POST WW-1 CONTRIBUTED TO THE INDEPENDENCE STRUGGLE. ONE MORE IN FACT THE MOST IMPORTANT ASPECT WAS THAT POST INDEPENDENCE THE COUNTRY HAD A WELL TRAINED EXPERIENCED ARMY. NO OTHER NATIONAL LEADER

INCLUDING THE MOST PROMINENT ONES, HAD AN IDEA ON THIS ISSUE.THEY INSISTED MORE ON MORALISTIC BONHAMMIE RATHER THAN HARD GROUND REALITIES/ MILITARY THOUGHT. NO WONDER WE HAD TO FACE A NATIONAL DISGRACE IN 1962 FROM WHICH WE HAVE NOT FULLY RECOVERED TILL DATE.

It is to the above that I wish to draw the attention of the reader before he becomes judgmental and pass a wholly unsubstantiated view and paint a LEGENDARY PERSONA with the wrong brush. That time India had 11 provinces and based on the demonstrated performance, non measures up to PUNJAB'S performance .And the effect does not end there, after all who can deny that it is those elders of ours who went abroad in ww1&2 who on return brought ideas even for economic, social, educational even on living conditions etc which took roots in our society bearing fruits today when a large number from our among st are reaching to the highest level whether in military civil or other ventures . Like how many of us are aware that when it came to indianise the officer class in the army (INDIAN MILITARY ACA DEMY AT DEHRADUN WAS ESTABLISHED &SIR CHHOTU RAM JI WAS FOUNDER MEMBER OF THIS COMMITTEE UNDER SIR CHETWOOD) The journey commenced from SIR Chhotu Ram's dreams to see his folks at the helm of affairs .With this I leave it to the reader to give an appropriate title and reply the question that I have raised as the title of this write up. BEFORE I END UP, WISH TO BRING TO NOTICE OF THE READER, THREE MAIN REASONS FOR THE BRITISH GRANTING FREEDOM TO INDIA.APART FROM THE DISQUIET IN THE DEFENSE FORCES AND POLITICAL ACTIVITIES THERE WAS AN ECONOMICAL ANGLE TOO (THE UPSETTING/ DISTURBING BALANCE OF PAYMENT VIS A VIS POUND STERLING AND THE INDIAN RUPEE AND THE MAIN REASON WAS LIABILITY OF PAY, PERKS AND PENSION OF THE MOBILIZED INDIAN MANPOWER. SIR CHHOTU RAM JI WAS THE MAIN ARCHITECT AND PRINCIPAL PLAYER OF THIS ENTIRE STRATEGY TO HAVE WELL EXPERIENCED STANDING DEFENSE FORCES FOR INDEPENDENT INDIA. ALSO PERTINENT TO MENTION THAT HE WAS AN ICON EVEN FOR THOSE WHO WERE MILITARY MEN AND WERE PREPARED TO GO TO ANY EXTENT ON HIS CALLING (THE BRITISH KNEW IT TOO WELL AND WERE ALWAYS CONSCIOUS OF THIS WHILE DEALING WITH THIS LEGENDARY PERSONALITY/SON OF THE SOIL .IT CERTAINLY IS NO MEAN ACHIEVEMENT NO OTHER POLITICAL LEADER OF HIS TIMES, EVEN REMOTELY MEASURED UP TO HIM.

It is worthy of note that out of three main reasons for British granting independence, Sir Chhotu Ram was of major consequences in two of them. I politely suggest to our people specially those who pass a comment in a great hurry and on flimsy insight, to read and decide rather than pass on here say.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl 26/5'6" MA.Sociology from Punjab University Chandigarh, Presently working as guest lecturer in Govt. college for girl sector-14, Pkl. Father had worked as Sub-Divisional Eng. in Huda. Avoid Gotras: Beniwal, Dabas, Sehrawat. Cont.: 09876944845
- SM4 Jat Boy 27/5'8", B.Com + MBA (Finance) working as Accounts officer in Mohindra & Mohindry Company Rs. 3.50 Lacs PA, Avoid Gotra: Dhankad, Takshak, Dalal, Cont.: 09896219686
- SM4 Jat Girl 26/5'5", father Associate Professor & Mother Headmistress, Avoid Gotra: Dhillon, Boora, Dulet, Cont.: 09813088088
- SM4 Jat Girl 31/5'5" MCA, MBA, NET, Ph.d. Employed as Director in Engineering College, Palwal. Avoid Gotras: Saharan, Hooda, Malik, Cont.: 09813730434, 01257-277179
- SM4 Jat Girl 24/5' MA (History), BEd. Pursuing M.Phil from Punjab University Chandigarh. STET (PGT) qualified. Father Haryana Govt. Employee at Panchkula. Avoid Gotras: Rangi, Kuhar, Rana, Solanki, Tomar, Gehlan, Cont.: 09467507715
- SM4 Jat Girl 25/5'2" Chemical Engineer from P.U. (B.Tech.) Employed in Reliance Company in Vadodra (Gujrat) with 6.5 lac package Avoid Gotras: Lohchab, Bajaad, Hooda, Dhankar, Cont.: 08146991568, 09803450267
- SM4 Jat Girl 26/5'3" MCA, MBA Employed as supervisor in Central Govt. on contract basis. Avoid Gotras: Bagri, Nehra, Nain, Cont.: 09417415367
- SM4 Jat Girl 25/5'6" (12.9.89) M.S.c. Microbiology, BEd. Avoid Gotras: Lather, Malik, Kundu, Cont.: 09780938830
- SM4 Jat Girl 26./5'3" MSc. (Biotech) NET, JRF cleared. Pursuing PHD. Avoid Gotras: Malik, Dhankar. Kadyan, Cont.: 09910164591, 09818478485
- SM4 Jat Girl 26.6/5'3" B.Tech. Employed in MNC Noida, Avoid Gotras: Dhankar, Joon, Sangwan, Cont.: 09213500435, 09417869733
- SM4 Jat Girl 25.6/5'3" PGT (Chemistry Lecturer) HES-II, Preferred class I or II officer resident of Panchkula, Chandigarh & Mohali. Avoid Gotras: Nandal, Hooda, Lakra, Cont.: 09915805679
- SM4 Jat Girl 28/5'3" Double MA & B.Ed. J.B.T Employed as JBT Teacher in Haryana Government since 2011. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhal, Cont.: 09467671451
- SM4 Jat Girl 23/5'2" B.Tech (CSE), Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon, Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Boy 29/6' (8.10.85) LLB, Doing LLM, Avoid Gotras: Dhankhar, Joon, Sangwan, Cont.: 09213500435, 09417869733
- SM4 Jat Boy 24/5'9" Employed as Clerk in Excise & Taxation Deptt. Haryana Government. Agriculture land 18 acres. Avoid Gotras: Kadyan, Jakhar, Jatrana, Cont.: 09466352484
- SM4 Jat Boy 25.6/6'1" M. Tech from PEC Employed as Lecturer in a private College at Panchkula. Father Govt. Officer. Own House at Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Maan, Dhul, Cont.: 09417869505
- SM4 Jat Boy 26.6/5'9" BS.c Computer Science Employed as Assistant in Govt. Job. Avoid Gotras: Puniya, Solath, Jhajra, Cont.: 09467782712, 09888887312
- SM4 Jat Boy 24/6' Employed as Constable in Chandigarh Police, Avoid Gotras: Dahiya, Malik, Pawaria, Cont.: 09417567383

शहीद उदमी राम सरोहा व साथियों का बलिदान

jkd'k ljkgk

सूरा सो पहचानिए, जो लड़े देश के हेत।
पुरजा–पुरजा कट मरे, ना छोड़े वे खेत।
भारत देश की खातिर शीश कटाने वाले।
अमर जाट शहीद क्यों बन बैठे बेगाने।।

दो भुजाओं के बल व साथियों के सहयोग से एक छोटे से क्रांतिकारी संगठन को खड़ा कर अंग्रेजो के विरूद्ध देश की आजादी का बिगुल बजाने वाले शहीद उदमी राम सरोहा के स्वाभिमान व वीरता की गाथा सोनीपत (हरियाणा) की पावन धरती के कण–कण में विद्यमान है। उदमी राम की जवानी जब अंकुरित हो रही थी उस समय स्वतन्त्रता या क्रान्ति का नाम लेना अपराध माना जाता था। आजादी का नाम लेने वालों को कोडो से पीटा जाता था एवं उनकी खाल उधेड़ दी जाती थी। चतुर अंग्रेज भारत के खजाने को धीरे–६ गीरे इंगलैण्ड भेज रहे थे गुलामी में देशभक्ति दब कर रह गयी थी। अंग्रेजो की अदालत व अंग्रेज व्यापारी किसानों का खुन चुस रहे थे। दिल्ली के आस–पास देहात, सोनीपत, रोहतक, फरीदाबाद, बल्लभगढ़, अम्बाला, कुरूक्षेत्र मेवात, मेरठ बागपत, आगरा, बुलन्दशहर, सहारनपुर, मुज्जफरनगर तथा अलीगढ़ आदि के जाट किसानों में भारी असन्तोष फैल रहा था। 10 मई 1857 को मेरठ में सेना में विद्रोह होने के पश्चात बहादुर शाह जफर को हिन्दुस्तान का बादशाह घोषित कर दिया गया। विद्रोहियों ने शाही महल में घुसकर बहुत से अंग्रेजों व अंग्रेज अधिकारियों को मार दिया। जिसके परिणाम स्वरूप अंग्रेजों में भगदड़ मच गयी तथा उन्होंने दिल्ली से पलायन करना शुरू कर दिया तथा उनमें से अनेक अपने प्राण बचाने के लिए सोनीपत (हरियाण) की तरफ चल पड़े जी.टी. रोड़ से सोनीपत जाने वाली सड़क पर बसा हुआ है गांव लिबासपुर जिसमें सरोहा गोत्र के जाटों की अधिकता थी। इसी लिबासपुर गांव में एक बहुत ही मेहनती, निडर तथा क्रांतिकारी विचारों का होनहार नौजवान उदमीराम था जो अपनी युवावस्था में ही अनी योग्यता तथा कर्मठता से गांव का नम्बरदार बन गया था उसने अपने जैसे 22 नौजवानों को मिलाकर क्रान्तिकारी संगठन बनाया। उदमी राम अपनी घोड़ी पर बैठकर पूरे क्षेत्र में घुमा करता था उसने पूरे क्षेत्र में माल गुजारी न देने का ऐलान कर दिया तथा अंग्रजों को सबक सिखाने के लिए इस क्रान्तिकारी संगठन ने सड़क पर चलने वाले अंग्रेजों को मौत के घाट उतारना शुरू कर दिया यह किसान की दुर्दशा तथा लूट का प्रतिशोध था। उदमी राम ओर उसके साथियों ने सर पर कफन बांध लिया था अब तो उनके सामने एक ही लक्ष्य था अंग्रेजी साम्राज्यवाद से मुक्ति ओर देश की आजादी।

एक दिन एक अंग्रेज अपनी ऊंटगाडी पर सवार होकर लिवासपुर गांव के सामने से पानीपत की तरफ जा रहा था। उसके साथ उसकी पत्नी भी थी। उदमीराम और उसके साथियों ने उन्हें घेर लिया क्रान्तिकारीयों के सर पर खून सवार था वे अग्रेजों के अत्यीचारों से तंग आ चुके थे। अंग्रेजों के कहर से पीडित वीर उदमीराम की टोली के जवानों ने उस अंग्रेज अधिकारी को मौत के घाट उतार दिया परन्तु उसकी पत्नी को बहन स्वरूप मानकर क्रान्तिकारियों ने उसे कोई नुक्सान नहीं पहुंचाया। वीर उदमी राम की टोली ने उस दिन सांयकाल भालगढ में रहने वाली एक ब्रह्मण महिला को उस अंग्रेज नारी की देखभाल की जिम्मेदारी सौंप दी तथा अंग्रेज महिला के भोजन तथा वस्त्र आदि की भी व्यवस्था करवा दी। इस घटना का समाचार तुरन्त आसपास के गांव में फैल गया। दूसरे गांवों से भी क्रान्तिकारी लोग लिबासपुर पंहुच गऐ उन्होंने वीर उदमीराम और उसके साथियों को समर्थन देने की घोषणा की तथा अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष और तेज करने की योजना बनाई गयी। इस घटना का समाचार राठधना गांव के सीताराम को भी मिला वह अंग्रेजों का मुखिया था उसने लिबासपुर आकर पूरी घटना की जानकारी प्राप्त की तथा अंग्रेजों का विरोध करने वाले क्रान्तिकारियों की सूची तैयार की। सीताराम अंग्रेजों से बड़ा ईनाम प्राप्त करना चाहता था। जिसके लालच में उसने भालगढ़ जाकर ब्राह्मण महिला व अंग्रेज नारी से बातचीत की तथा उन्हें बताया कि उदमीराम व उसके साथियों गुलाब, जसराम और रतिया इत्यिादी ने अंग्रेज महिला के पति को ही नहीं मारा है बल्कि अन्य भी कईं अंग्रेजों को मौत के घाट उतारा है तथा अब ये लोग आपको भी मारना चाहते हैं यह सुनकर अंग्रेज महिला काफी डर गई और उसने सीता राम को अपनी मदद करने को कहा तथा सीताराम से कहा कि यदि वह उसे सकुशल पानीपत स्थित अंग्रेजों के शिवर में पहुंचा दे तो उन दोनों को भारी मात्रा में ईनाम–इकराम दिलवाकर मालामाल कर देगी। इसी प्रलोभन में आकर सीताराम ने अंग्रेज महिला को सुरक्षित चुपचाप सवारी का प्रबन्ध करके पानीपत स्थित अंग्रेजों के शिवर में पहुंचा दिया।

सीताराम जैसे गद्दारों के कारण यह देश गुलाम हुआ था। 1857 की आजादी की जंग के बाद स्थापना के पश्चात अंग्रेजों ने क्रान्तिकारियों को दण्ड देना शुरू कर दिया। क्रान्तिकारियों को सामूहिक तौर पर दण्डित किया गया। इसी कड़ी में सोनीपत जनपद का नम्बर आया। अंग्रेजी सेना ने बगावत में भाग लेने वाले मुरथल व कुंडली गांवों को जमकर लुटा तथा गांव के बागियों को मौत के घाट उतार दिया। इसी तरफ एक दिन सवेरे चार बजे ग्राम लिबासपुर को अंग्रेजी सेना ने चारों ओर से घेर लिया। घटना की सूचना मिलते ही उदमीराम व उसके साथियों ने परिस्थिति को भांप लिया। उदमी राम सरोहा की टोली के सभी रणबाकुरे अंग्रेजी सेना से लड़ने के लिए मैदान में उतर आये। क्रान्तिकारी अंग्रेजी सेना से बहुत कम थे परन्तु तलवारों, गंडासों, लाठियों तथा भालों से लैस होकर भारत माता के इन महान सपूतों ने अंग्रेजों से भयानक युद्ध किया जिससे अंग्रेजों के छक्के छूट गये परन्तु अंग्रेज सेना आधुनिक हथियारों से लैस व संख्यां में बहुत अधिक थी जिसके कारण अंग्रेज गांव वालों पर भारी पड़ने लगे। दिन निकलते निकलते बहुत से क्रान्तिकारी अंग्रेजों को मारकर वीरगति को प्राप्त हुए तथा शेष को अंग्रेजी सेना द्वारा बंदी बना लिया गया। अंग्रेजों द्वारा सारे गांव को बुरी तरह लूटा गया तथा लूट का बहुमूल्य सामान कई गाड़ियों में भरकर दिल्ली भेज दिया गया अनेक लोग मौत के भय से गांव छोड़कर अन्य स्थानों पर भाग गये। गांव में अंग्रेजी राज कायम हो गया था तथा गांव पूरी तरह उजड़ चुका था । जिन क्रान्तिकारियों को अंग्रेजों द्वारा पकड़ा गया था राई स्थित सरकारी पड़ाव में लाया

प्रेम आँखों से नहीं, ह्रदय से देखता है। इसलिये प्रेम के देवता को अंधा बताया गया है। – शेक्सपीयर

गया। उन्हें सड़क पर लिटाकर अंग्रेजों द्वारा उन्हें भारी पत्थर के कोलहू के नीचे डालकर पीस दिया गया। जिनमें उदमी राम का भतीजा गुलाब सिंह, जसराम, रतिया तथा सहजराम आदि भी थे।

वीर युवक उदमी राम को सरकारी पडाव के पीपल के पेड़ से बांध दिया गया तथा उसके हाथों तथा पैरों मे कील ठोक दी गयी। वीर उदमी राम 35 दिन तक असहनीय पीड़ा से तड़पता रहा लेकिन उसने अंग्रेजों से माफी का एक वचन भी नहीं बोला तथा अन्त में इसी तरह तड़पते हुए शहीद हो गया। इस प्रकार वीर उदमी राम व उसके क्रांन्तिकारी साथियों ने अंग्रेजो से लोहा लेकर हरियाणा ओर गांव लिबासपुर का नाम अमर कर दिया। ऐसे महान व देशभक्त शहीदों को कोटि–कोटि नमन। आज भी बिलासपुर में रहने वाली उदमीराम, जसराम, रामजस, सहजराम तथा रतिया की पीढ़ियों के लोग आजादी की लड़ाई लड़ने वाले अपने पूर्वजों के कारनामें सुनकर गर्व से भर जाते हैं। देश की आजादी की लड़ाई में वीरगति को प्राप्त होने वाले शहीदों का नाम भारत के इतिहास में सदैव अमर रहेगा। शहीद उदमी राम व उसके साथियों का देश के लिये दिया गया बलिदान सदैव भावी पीढ़ी में त्याग, सामाजिक मूल्यों के प्रति आस्था, जातीय गौरव व देश के प्रति सर्वस्य बलिदान कर देने की भावना पैदा करने में सहायक सिद्ध होगा

''शहीदों की चिताओं पर लगेंगें हर बरस मेले।
वतन पे मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।''

जम्मू में चौ. छोटूराम जाट भवन का हुआ शिलान्यास

–देश के कोने–कोने से जाट नेताओं ने की शिरकत

31 मार्च को जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर 1 पर स्थित 17 मील पत्थर, ठंडी खुंई विजयपुर में दीन बंधु सर छोटूराम भवन की आधारशिला राज्य सभा सांसद व चौधरी छोटूराम के नाती चौ. बीरेन्द्र सिंह ने अपने कर कमलों से रखी। इस शिलान्यास कार्यक्रम को सर छोटूराम जाट चैरिटेबल ट्रस्ट जम्मू ने आयेजित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व डीजीपी व जाट सभा चंडीगढ़ के अध्यक्ष चौ. महेन्द्र सिंह मलिक ने की। इस अवसर पर चौ. विरेन्द्र सिंह राज्यसभा सांसद व दीनबन्दु सर छोटूराम के धोहते ने मुख्यअतिथि के रूप में शिरकत की। सुबह हरियाणा रोहतक से वैश्विक आर्य के संरक्षक महावीर सिंह शास्त्री ने वैदिक मंत्रोचारण द्वारा भव्य यज्ञ–हवन से शुरूआत की। उसके बाद शिलान्यास पर कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जो देर सांय तक चलता रहा।

इस अवसर पर शिलान्यास कार्यक्रम के संयोजक व सर छोटूराम जाट चैरिटेबल ट्रस्ट के महासचिव चौ. कमल सिंह ने अपने उद्बोधन में बताया कि जम्मू कश्मीर में जाट समाज की 6 लाख से ज्यादा आबादी है और समाज का अपना कोई भवन नहीं है। समाज को विभिन्न कार्यक्रमों, विवाह–शादियों के लिए अन्य जगह भारी भरकम किराया देकर कार्यक्रम आयेजित करने पड़ते हैं। यही नहीं गांव से आकर जम्मू शहर में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण करना बढ़ा मंहगा पड़ता हैं, क्योंकि शहर में किराया बहुत ज्यादा है और एक सामान्य किसान परिवार की आर्थिक हालात इतनी नहीं होती कि वह हास्टल इत्यादि का अतिरिक्त खर्चा वहन कर सके।

यही नहीं मंच संचालन कर रहे संपादक जसबीर सिंह मलिक ने बताया कि सर छोटूराम जाट भवन के बनने से बाहर से आने वाले तीर्थ यात्रियों व पर्यटकों को राष्ट्रीय राजमार्ग पर व्यवस्थित होने के कारण बहुत लाभ पहुंचेगा। कार्यक्रम की शिलान्यास करने के बाद चौ. बीरेन्द्र सिह ने उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए कहा कि दीन बंधु सर छोटूराम सच्चे किसान हितैषी नेता थे, जिन्होंने अपने कार्यों से हिन्दुस्तान के किसानों की दशा ही नहीं दिशा भी बदलकर रख दी थी। मण्डी व फण्डी की भारी धांधलियों से उन्होंने किसानों को निजात दिलवाई। यहीं नहीं सतलुज पर भाखड़ा नंगल बांध बनवाकर उनहोंने उत्तरी भारत के किसानों की काया ही पलट कर रख दी। वे सभी धर्म व जाति से ऊपर उठकर एक आम जमीन से जुड़े हुए नेता थै मुस्लिम समाज ने ही उनको रहबरे आजम मसीहा कहा। यही नहीं हर गरीब व मजलूम के हक के लिए वे सदा संघर्ष करते रहे और संयुक्त पंजाब में मंत्री रहते हुए उन्होंने 29 से ज्यादा कानून किसानों और मजदूरों के हक के बनवाये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए चंडीगढ़ से आए महेन्द्र सिंह मलिक ने कहा कि दीन बंधु सर छोटूराम सभी तरह की मजहबी बातों से ऊपर उठकर सामूहिक तरक्की की बात सोचते थे। गुलामी काल में भी वे किसानों के हकों के लिए तत्कालीन अंग्रेजी हकूमत से टकरा गए थे। दुर्भाग्य वश उनकी मृत्यु 1945 में हो गई थी। वे भारत–पाकिस्तान के बंटवारे के खिलाफ थे और अक्सर कहा करते थे कि देश का बटवारा उनकी लाश पर ही हो सकेगा। यदि वे जिन्दा रहते तो पाकिस्तान कभी नही बनता और इस देश के दो टुकड़े ना होते। आज उनकी नीतियों पर चलकर उनके बताए रास्ते पर चलने की आवश्यकता है किसानों को फिर एकजूट होना पड़गा।

हमें जिन पर गर्व है।

सेक्टर–21 पंचकूला की ईशा दुहन ने यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन के सिविल सर्विसेज एग्जाम में 59वां रैंक हासिल किया है। ईशा ने पहले ही प्रयास में यह सफलता प्राप्त की है। उनका पूरा परिवार उनकी इस सफलता पर रोमांचित है। ईशा के पिता ईश्वर सिंह आईटीबीपी में डीआईजी है और इस समय शिलांग मेघालय में तैनात हैं।

थापर यूनिवर्सिटी से बीटेक कर चुकीं ईशा सेक्रेड हार्ट सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सेक्टर–26 और भवन विद्यालय, सेक्टर–27 की स्टूडेंट रहीं हैं। ईशा की मां संतोष दुहन एक गृहिणी है और उन्होंने बेटी को लगातार आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। अपनी सफलता पर उत्साहित ईशा ने बताया कि उनके परिवार ने लगातार मदद की और उन्हें तैयारी के लिए पूरा समय दिया।

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला इनकी शानदार सफलता पर बार–बार हार्दिक बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हैं।

कामिनी के शब्द जितनी आसानी से दीन–इमान से गारत कर सकते है, उतनी आसानी से उनका उद्धार भी कर सकते है। – प्रेमचन्द

हुनर होगा, तभी बनेंगे होनहार

tkfxUnj fl\g]

अपनी दुनिया खुद बनाती है तो खुद में कोई न कोई हुनर विकसित करना ही होगा.........

सफलता की राह में एक बड़ी बाधा है तैयारी की कमी। इस दुनिया में कुछ भी पका–पकाया नहीं मिलता। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है– 'मैं जितनी कड़ी मेहनत करता हूँ, भाग्य उतनी ही मेरे पास आता है।' सफलता और उपलब्धि पाने के लिए जरूरत से ज्यादा मनोरंजन, गपशप आदि को छोड़कर अपने निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप तैयारी करनी होगी। आपकी तैयारी ही हर मौके पर आपको फायदा पहुंचा सकती है। वही छात्र किसी परीक्षा में अच्छे अंक ला पाते हैं, जो लगातार मेहनत करते हैं। वही कारोबारी सफल हो पाते हैं, जो लगातार अपने व्यवसाय की बढ़ोतरी के बारे में सोचते है।

मेहनत के साथ–साथ खुद में वास्तविक हुनर पैदा करना भी जरूरी है। वास्तविक हुनर न हो तो सही दिशा में कदम बढ़ ही नहीं सकता। एक बार एक विद्वान ने जंग में एक युवक को आरे से पेड़ काटते देखा, जो बेहद थका हुआ लग रहा था। विद्वान ने उससे पूछा, 'तुम क्या कर हो?' युवक ने जवाब दिया, 'देख नहीं रहे हो, पेड़ काट रहा हूँ। पांच घंटे से इसको काटने में लगा हूं।' इस पर विद्वान ने उसे सलाह दी कि थोड़ा आराम कर लो और इस दौरान अपने आरे की धार को भी तेज कर लो। वह युवक उनकी सलाह को दरकिनार करते हुए अपने काम में लगा रहा। फिर बोला, 'न तो मेरे पास आराम करने का वक्त है और न ही धार तेज करने का समय। मैं तो जब तक इसे काट नहीं लूंगा, बैठूंगा नहीं' विद्वान उस मुर्ख युवक को और कुछ कहे बिना आगे बढ़ गया। ज्यादातर समय हम लोग भी अपने हुनर को निखारे बिना या पूरी तैयारी के बिना ही काम में जुटे रहते हैं। आपमें पूरी ऊर्जा होगी तो पेड़ काटने में अथवा और कोई भी काम करने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा। इसीलिए मेहनती बनने के साथ–साथ हुनरमंद भी बनें।

कोई भी व्यक्ति अपने क्षेत्र में उचित प्रशिक्षण प्राप्त किए बिना सफल हो ही नहीं सकता। छात्र बिना पढ़े–लिखे डॉक्टर, इंजीनियर, आफिसर आदि नहीं बन सकता। खिलाड़ी बिना अभ्यास किए बेहतर खेल ही नहीं सकता। कारोबारी व्यवसाय की बारीकियां जाने बिना सफल उद्यमी बन ही नहीं सकता। आपका संबंध चाहे जिस भी क्षेत्र से हो, आप विशेषज्ञों की मदद से खुद को प्रशिक्षित करें, हुनर पैदा करें। तभी आगे बढ़े, अन्यथा सफलता की बात न सोचें। यदि आप भी अन्य लोगों की तरह अंधाधुंध पेड़ काटने में लगे हैं तो जरा रूकें और सोचें कि आरे की धार को कैसे तेज किया जाए। इसके लिए योजनाएं बनाएं, किसी विशेषज्ञ की सलाह लें, अपने खान–पान और सेहत पर ध्यान दें, किसी बेहतर संस्थान से अपने क्षेत्र से संबंधित उचित ट्रेनिंग लें, टाइम मैनेजमेंट का ध्यान रखें और उचित दिनचर्या बनाकर काम करें।

सच है कि हुनरमंद मेहनती ही सफलता की सीढ़िया चढ़ते हैं इसके अलावा लक्ष्य की प्राप्ति तक अपने हुनर पर भरोसा करने की भी जरूरत है। थॉमस एडीसन ने कहा है, 'जीवन के रास्ते में कितने ही लोग घबराकर पीछे हट जाते हैं, जबकि सफलता बिल्कुल उनके आसपास ही होती है। इसीलिए रूकें नहीं, हुनर में तब तक निखार लाएं, जब तक कि मंजिल न मिल जाए।'

'k"k i\t&1

Hkkb\ l\j\Un\ fl\g efyd ;knxkj vku nh LikV vf[ky Hkkjrh; fucU/k y\[ku çfr;kfxrk & fnukd 04 t\ykb] 2014

जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा दिनांक 04 जुलाई 2014 को सुबह 10 से 11 बजे तक कालेज, युनिवर्सिटी तथा दसवीं, 10+1 व 10+2 क्लास के विद्यार्थियों के लिए भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार आन दी स्पाट अखिल भारतीय निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता शहरी व ग्रामीण दो श्रेणियों में निम्नलिखित परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की जायेगी।

1. Gyandeep Model Senior Secondary School, Sec. 20-C, Chandigarh.
2. Ch. Bharat Singh Memorial Sports School Nidani, Distt. Jind (Haryana)
3. Bhai Surender Singh Malik Memorial Girls SR. Secondary School, Nidani
4. Govt. Girls Sr. Secondary School, Shamlo-kalan, Distt. Jind (Haryana)
5. Govt. Girls Senior Secondary School Lajwana-kalan, Distt. Jind
6. Govt. Senior Secondary School Gatoli, Distt. Jind
7. Govt. Girls Senior Secondary School, Julana, Distt. Jind (Haryana)
8. Govt. Senior Secondary School, Julana, Distt. Jind.
9. Govt. Senior Secondary School, Kilazaffar Garh, Distt. Jind
10. Gyandeep Model High School Sector 18, Panchkula
11. Sarthak Government Integrated Model Sr. Sec. School, Sector 12-A, Panchkula

इस प्रतियोगिता के लिए प्रतियोगी किसी भी परीक्षा केन्द्र पर प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये आवेदन कर सकता है। प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम ईनाम 3100 रुपये व गोल्ड पदक, द्वितीय ईनाम 2100 रुपये व कांस्य पदक, तृतीय ईनाम 1500 रुपये व रजत पदक के पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। इसके इलावा 1000 रुपये, 900 रुपये, 700 रुपये व 600–600 रुपये के सांत्वना पुरस्कार दिये जायेंगे। प्रतियोगिता हिन्दी या अंग्रेजी किसी भी भाषा में दी जा सकती है जो कि 1000 शब्दों से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

प्रतियोगी अपने नजदीक के किसी भी परीक्षा केन्द्र में 02 जूलाई 2014 तक आवेदन कर सकता है। निबन्ध का विषय प्रतियोगिता शुरू होने से पहले बताया जायेगा। परीक्षार्थीयों को परीक्षा के लिए केवल अपना पैन तथा कार्डबोर्ड लाना होगा जबकि उत्तर पुस्तिका केन्द्र पर उपलब्ध कराई जायेगी। विजेताओं को पुरस्कार बसन्त पंचमी तथा सर छोटूराम जयन्ती समारोह के अवसर पर प्रदान किये जायेंगे। इस प्रतियोगिता का सारा खर्च भाई सुरेन्द्र सिंह मैडिकल एजुकेशन तथा अनुसंधान निडानी (जीन्द) द्वारा वहन किया जायेगा।

कायर अपने जीवन– काल में अनेक बार मरते हैं। – शेक्सपियर

आलस्य त्याग

– नरेन्द्र आहूजा विवेक

व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्र के उत्थान में सबसे बड़ा बाधक शत्रु मनुष्य का आलस्य है। किसी भी कार्य को प्रमादवश निरन्तर टालते रहना उसे ना करने के बहाने बनाना ही आलस्य है। कर्महीनता आलस्य का दूसरा नाम है। योगेश्वर कृष्ण ने विषाद में फंसे अर्जुन को महाभारत के युद्ध के लिए अर्थात कर्त्तव्य कर्म करने की प्रेरणा देते हुए कर्महीनता को पापाचार की श्रेणी मे रखा था। ऋग्वेद में **अकर्मा दस्युः।** क्र. 10/22/8 का संदेश देकर कर्म न करने वाले आलसी को दस्यु कहा है। वैसे भी आलस्य परमेश्वर के दिए हुए हाथ पैरों का अपमान करना है। महार्षि देव दयानन्द भी आर्योद्देश्यरत्नमाला में मनुष्य को परिभाषित करते हुए "मननशील विचारवान होकर कार्य करने वाले को मनुष्य कहते हैं।" अर्थात् मननशील होना मनुष्य के लिए अर्थात पुरूषार्थी उद्यमी वा कर्मशील होना पुरूष का लक्ष्ण है। कर्महीन आलसी मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है।

मनुष्यत्व मनुष्य का, पुरूषार्थ उद्यमी पुरूष का धर्म है। यदि मनुष्य वा पुरूष में से उसके धर्म मनुष्यत्व वा पुरूषार्थ उद्याम परिश्रम को निकाल दिया जाए तो ऐसा आलसी व्यक्ति धर्मविहीन होकर मनुष्य के रूप में पशु की भांति भार बनकर धरती पर विचरण करता है। पाश्चात्य विद्वान टेलर ने आलस्य को जीवित व्यक्ति की मृत्यु बतलाया तो वहीं सुकरात ने आलस्य में जीवन बिताना आत्महत्या के समान कहा है। महात्मा गांधी ने भी "ईश्वर उसी की साहयता करता है जो अपनी सहायता स्वंय करता है" कहकर कर्म को प्रधानता दी है।

हम लोग अपने मन में कर्महीनता वा आलस्य के भी कई बहाने गढ़ लेते हैं जिसमें **1.** इन्द्रियों के वशीभूत प्रमादी हो जाना **2.** कर्म को बंधन का कारण मानकर कर्महीन हो जाना प्रमुख हैं। पणिनी अष्टाध्यायी में मनुष्य को **'स्वतंत्रः कर्ता'** कहा गया। महार्षि दयानन्द ने भी कर्ता को परिभाषित करते हुए आर्योद्देश्यरत्नमाला में लिखा "जो स्वतन्त्रता से कर्मों को करने वाला हैं, अर्थात जिसके स्वाधीन सब साधन होते हैं वह कर्ता कहलाता है। यहां स्वाधीन साधन का तात्पर्य स्पष्ट है कि किसी कार्य को करने के लिए आवश्यक साधन कर्ता के स्वंय के आधीन हैं। अर्थात स्वतन्त्र वह है जिसका प्राण इन्द्रिय अन्तःकरण आदि उसके आधीन है। यदि मनुष्य की इन्द्रियां प्राण अन्तःकरण उसके आधीन ना हो अपितु मनुष्य स्वंय इन्द्रियों का दास बन जाये। अर्थात ऐसे आलसी प्रमादी अकर्मण्य मनुष्य के आधीन साधन नहीं है अपितु वह स्वंय उन साधनों के आधीन है। ऐसा आलसी मनुष्य मन इन्द्रियों रूपी घोड़े के पैरों में लगी नाल की भांति निरन्तर दंड का भागी होता है।

अकर्मण्यता वा आलस्य का दूसरा प्रमुख कारण कर्म को बंधन का कारण मान लेना है। जबकि सच्चाई यह है कि परमपिता परमेश्वर सर्वशक्तिमान न्यायकर्ता प्रत्येक मनुष्य के प्रत्येक शुभ वा अशुभ कर्म का पुरस्कार वा दंड नियति भागय वा प्रारबध के रूप में देते हैं। महाभारतकार भी लिखते हैं **आवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्** अर्थात कर्ता होने के नाते हमें अपने प्रत्येक शुभ–अशुभ कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। इससे तो स्पष्ट हुआ कि मनुष्य द्वारा जीवन में किए गऐ शुभ कर्म ही उसकी मुक्ति का कारण बनते हैं। इसलिए वेद भगवान ने **"मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः।** ऋग्वेद 8/48/14 द्वारा आदेश दिया कि 'आलस्य, प्रमाद और बकवास हम पर शासन ना करें।'

आलस्य वह दीमक है जो मनुष्य को अंदर से खोखला कर देता है। मनुष्य जो भी नित नई योजनाएं बनाता है वह आलस्य के कारण पूरी नहीं कर पाता। आलस्य मनुस्य पर अंदर से आक्रमण करने वाला वह शत्रु है जो उसे अंदर से खोखला कर देता है। प्रतिकूल हवा का एक झोंका आलसी मनुष्य को खोखले ठूंठ की भांति गिरा देता है।

आलस्य प्रमाद, अकर्मण्यता को त्यागने और कर्म करने की प्रेरणा देते हुए वेद भगवान कहते हैं **"कृतं में दक्षिणे हस्ते जयो में सव्य आहितः।"** अर्थात यदि कर्म मेरे दांये हाथ में तो विजय मेरे बांये हाथ में रखी हुई है। वैसे भी पूर्ण पुरूषार्थ की गई प्रार्थना व्यर्थ होती है। ऋग्वेद में कहा गया है **'इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तम्'** क्र. 8/2/18 अर्थात देवता भी पुरूषार्थी को ही पंसद करते हैं। **'वा वृधुः सौभागाय।'** क्र. 5/60/5 अर्थात मनुष्य को सौभाग्यशाली बनने के लिए आलस्य त्याग कर पुरूषार्थ करना चाहिए।

हमें जिन पर गर्व है

पीजीआइ ने ढूंढा लीवर सिरोसिस का नया ट्रीटमेंट

जाट सभा चंडीगढ़ के आजीवन सदस्य डॉ. वीरेन्द्र सिंह ने अब स्ट्रेम सेल निकाले बगैर सिर्फ इंजेक्शन से इन सेल को खून में एक्टिव करके लिवर तक पहुंचाकर सिरोसिस के गंभीर मरीजों का इलाज संभव हो गया है। 80 फीसदी से ज्यादा डेमेज हो चुके लिवर के मरीजों की जान बचाने का ये नया तरीका पीजीआई के हेप्टोलॉजी डिपार्टमेंट के प्रो. वीरेन्द्र सिंह ने निकाला है। स्टेम सेल से किसी बीमारी के इलाज का तरीका भले नया नहीं है, लेकिन पीजीआई के बिना सर्जरी किए स्टैम सेल बॉडी के अन्दर ही प्रभावित हिस्से तक पहुंचकर बीमारी को ठीक करने का ये तरीका दो साल की जद्दोजहद के बाद निकाला है। 17 जून को अमेरिकन जरनल ऑफ गेस्ट्रोएंटेरोलॉजी ने फार्मूले को अपने जरनल में पब्लिश किया है। डॉ. अरूण कुमार, मेडिसन की डॉ. लक्ष्मी नरसिमहन, इंटरलन मेडिसन के डॉ. आशीष भल्ला और डॉ. नवनीत शर्मा के अलावा ट्रांसफ्यूजन मेडिसन के डॉ. रत्तीराम वर्मा ने भी इस रिसर्च में मदद की।

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला इस शानदार उपलब्धियों पर बार–बार हार्दिक बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हैं।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।